अमूर्त्त आत्मा का अनुभव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मूर्त्त का अर्थ है आंखों से दिखाई देने वाली वस्तु। अमूर्त्त का अर्थ है जिसे नेत्रों से नहीं देखा जा सके। आंखें पौद्‌गलिक हैं। इसलिए पौद्‌गलिक पदार्थ को ही वे देख पाती हैं। पुद्‌गल भौतिक पदार्थ है। उन्हें नेत्रों से देखा जा सकता है। आत्मा अमूर्त्त है। अमूर्त्त होने के कारण आत्मा को देखा नहीं जा सकता। आत्मा का केवल संवेदन होता है। आत्मा के साथ कर्म लगे रहते हैं। आत्मा चेतन तत्व है। आत्मा के कारण ही शरीर चेतनवत् प्रतीत होता है। आत्मा के निकल जाने के बाद दिखाई देने वाला शरीर मृत प्राय हो जाता है। इसलिए आत्मा का महत्व है शरीर का नहीं। शरीर आत्मा की हाजिरी से कार्य करता है। अधिकांश लोग शरीर को ही आत्मा मानते हैं। शरीर आत्मा नहीं है। शरीर पंचभूतात्मक है। आत्मा अमूर्त्त है। आत्मा को नेत्रों से नहीं देखा जा सकता।

मृग की नाभि में कस्तूरी होती है किन्तु उसे वह समझ नहीं पाता। कस्तूरी की महक की खोज में इधर–उधर दौड़ता रहता है। मनुष्य की भी यही गति है। मनुष्य के अन्दर सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा विराजमान है, किन्तु वह उसे समझ नहीं पाता। कबीरदासजी ने लिखा है–

कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूँढे बन माहि।
ऐसे घट घट राम है, दुनिया देखे नाहि।।

अर्थात् आत्मा घट–घट व्यापी है फिर भी अज्ञान के कारण मनुष्य उसका दर्शन नहीं कर पाता। सुख का सागर मनुष्य में लहरा रहा है। किन्तु मनुष्य सुख बाहर खोजता है। बाहर का सुख भीतर के सुख का बिन्दुमात्र है। इसी अल्प सुख में मनुष्य जीवनभर लगा रहता है और अमूल्य जीवन को नष्ट कर देता है।

आत्मा सत्य अर्थात ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। आत्मा सत्य सनातन है। आत्मा चेनतमय परमाणुओं का पिण्ड है। हर चेतन प्राणी में आत्मा रहता है। आत्मा के शरीर से निकल जाने पर शरीर नष्ट हो जाता है। शरीर जड़ है आत्मा सनातन और सत्य है। आत्मा के कारण ही शरीर चेतन प्रतीत होता है। जड़ वरण रूप, रंग, रस वाला होता है। विज्ञान ने अनेक तत्वों

को खोजा है। रूपी पदार्थ जड़ है क्योंकि उनमें टूटने और जुड़ने की क्रिया चलती रहती है। आत्मा न जुड़ती है और न टूटती है। वह एक रूप है, सत्य है और सनातन है। चेतना जड़ता से पृथक है। जिसने इस आत्म तत्व को जान लिया वह समस्त ब्रहमाण्ड को जान लेता है। भगवान महावीर ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने जड़ और चेतन सभी पदार्थों में आत्मा का दर्शन किया था।

चौरासी लाख जीव योनियों में आत्मा समान है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। भेद कर्मावरण के कारण दिखलाई देता है। कर्मों का आवरण जिस पर जितना घना है उस पर उतनी ही अधिक मलीनता है। इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व ऐसा है जो सनातन सत्य है। वह तत्व है आत्मा। आत्मा के अतिरिक्त जितने भी तत्व है, वे सभी गलन–मिलन धर्मा हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें पुद्गल कहा जाता है। यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है।

आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। आत्मदर्शन जीवन का सनातन सत्य है। आत्मदर्शन सही दृष्टि सही सोच के माध्यम से लोगों को शिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। दृष्टि के सही होने पर सब ठीक हो जाता है। इस संसार का वास्तविक सत्य क्या है? इसे हमे जानना है। सबसे निरपेक्ष होकर इस विषय पर चिन्तन करना चाहिए।

भौतिक सृष्टि पंचभूतात्मक है। यह लोक इसी पंचभूतों से बना हुआ है। पंचतत्वों के मेल से सृष्टि चलती है। भरण–पोषण करने से यह शरीर फलता फूलता रहता है। किन्तु जैसे ही इसके तत्व क्षीण होते हैं, यह जीर्ण शीर्ण होकर नष्ट हो जाता है। केवल आत्मा ही शेष रहता है और वही सनातन सत्य है। मैं बोल रहा हूं। कौन बुलवा रहा है? हांथ–पांव चलाने वाले कौन है? वह तत्व आत्मा है। वह शरीर में व्याप्त रहता है।

आत्मज्ञान से सही दृष्टि बनेगी और मिथ्या दृष्टि दूर होगी। नकारात्मक दृष्टिकोण परिवर्तित होगा। जब दृष्टि सही रहेगी तो सभी प्राणियों के साथ अच्छा व्यवहार होगा। सभी प्राणियों में

एक ही आत्मा का वास है। चाहे प्राणी छोटा हो या बड़ा, हाथी हो या चींटी सब में एक ही आत्मा निवाश कर रही है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। भेद है कार्मण शरीर के कारण। सही दृष्टिकोण होने पर सनातन सत्य का ज्ञान हो जाता है।

हमारे शरीर में जो हमे सुख–दुःख की अनुभूति होती है, वह कौन करता है? जड़ को अनुभूति नहीं होती। क्योंकि उसमें संवेदना नहीं है। अनुभूति आत्मा या चेतन तत्व करता है। अतः आत्मा ही सनातन सत्य है। आत्मा, ज्ञाता और द्रष्टा है। वह अनादि और अनन्त है। न तो उसे देखा जा सकता है न ही स्पर्श किया जा सकता है। आत्मा अमूर्त्त है। आत्मा के कारण ही शरीर चेतनवत् कार्य करता है। आत्मा अजर अमर और अविनाशी है। आत्मा का केवल अनुभव किया जा सकता है।